रजिस्ट्री सं. डी.एल.-33004/94 REGD. NO. D.L.-33004/94

सत्यमेव जयते

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 15] नई दिल्ली, बुधवार, जनवरी 25, 1995/माघ 5, 1916
No. 15] NEW DELHI, WEDNESDAY, JANUARY 25, 1995/MAGHA 5, 1916

राष्ट्रपति सचिवालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 25 जनवरी, 1995

सं. 80-प्रेज/95.—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को उनकी अति असाधारण वीरता के लिए अशोक चक्र प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. जे.सी.—216611 नायब सूबेदार सज्जन सिंह
13 कुमाऊँ (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 26 सितम्बर, 1994)

26 सितम्बर, 1994 को जम्मू और कश्मीर राज्य में जिला बुपवाड़ा के जलूराह गांव के निकट जंगल में छिपे आतंकवादियों के विरुद्ध 13 कुमाऊँ द्वारा घेराबन्दी और तलाशी अभियान के दौरान नायब सूबेदार सज्जन सिंह खोज टोली के कमाण्डर थे। आतंकवादियों के छिपने के दो स्थानों को पहचान कर अपनी टोली के साथ दबे पांव जब वे उन तक पहुंचने ही वाले थे कि आतंकवादियों ने पूरी टोली पर निशाना साधकर लगभग 15 मीटर की दूरी से भयंकर गोलियां बरसानी आरंभ की। इससे टोली का आगे बढ़ना असंभव हो गया। खोज टोली की सहायता के लिए एक अधिकारी अपने दल के साथ आगे बढ़े ताकि आतंकवादियों का ध्यान बंट जाए।

मौके का मूल्यांकन करते ही नायब सूबेदार सज्जन सिंह ने भांप लिया कि आगे बढ़ रहे अधिकारी और उनके दल की जान को खतरा है। अपने अधिकारी और दल के अन्य सैनिकों की जान बचाने के लिए नायब सूबेदार सज्जन सिंह ने एक अन्य सिपाही के साथ, सामने से आती हुई गोलियों की बौछार के बीच, गोली का जवाब गोली से देते हुए धावा बोल दिया। यद्यपि उन्हें पेट में अनेक गोलियां लगीं फिर भी अपनी सुरक्षा की रंचमात्र भी चिंता न करते हुए, अपनी राइफल से गोलियां बरसाते हुए वे आगे बढ़ते रहे। अंततः उनके हेलमेट को भेदती हुई कई गोलियां सिर के आरपार हो गईं और वे वहीं वीरगति को प्राप्त हुए।

नायब सूबेदार सज्जन सिंह की निर्भीक और बलिदानी कार्यवाही से न केवल चार आतंकवादी और उनके तथाकथित बटालियन कमांडर मारे गए, चार राइफलें तथा भारी मात्रा में गोली बारूद बरामद किया गया बल्कि अन्य अधिकारी और साथी जवानों की प्राण रक्षा भी हुई।

2. लेफ्टिनेंट कर्नल हर्ष उदय सिंह गौर (आई सी-36177) 10 बिहार (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 29 नवम्बर, 1994)

लेफ्टिनेंट कर्नल हर्ष उदय सिंह गौर और उनकी पल्टन की शीघ्र प्रतिक्रिया टोली ने जम्मू और कश्मीर के जिला बारामुला, ग्राम बाजीपुरा में छिपे कई भाड़े के विदेशी आतंकवादियों की धरपकड़ की कार्रवाई शुरू की। 29 नवम्बर, 1994 सुबह 7 बजे लेफ्टिनेंट कर्नल गौर और उनकी टोली पर उन विदेशी दरिंदों ने ए.के. रायफलों और यूनिवर्सल मशीनगन से भयंकर गोलीबारी की। लेफ्टिनेंट कर्नल गौर ने तुरन्त मौके का मूल्यांकन किया। उन विदेशी आतंकवादियों के निकल भागने के रास्तों की, अपनी दो कम्पनियों के सैनिकों द्वारा मुहानाबंदी की और और स्वयं भी जवाबी गोलीबारी की।

इस दो तरफा गोलीबारी के बीच 41 वर्षीय दबंग, शूरवीर लेफ्टिनेंट कर्नल गौर जमीनी आड़ का इस्तेमाल करते हुए सामरिक सूझबूझ से बढ़ते हुए विदेशी आतंकवादियों के बाजू तक पहुंच गए। उनकी इस अचानक साहसिक कार्यवाही से विदेशी आतंकवादी चकित होकर स्तब्ध रह गए। लेफ्टिनेंट कर्नल गौर ने उनमें से तीन आतंकवादियों को तुरन्त मौत के घाट उतार दिया।

उसी समय पहाड़ी के पत्थरों के पीछे से विदेशी दरिंदों ने यूनिवर्सल मशीनगन से लेफ्टिनेंट कर्नल गौर पर धुआंधार गोलियां बरसाईं जिससे उनकी अपनी और साथी सैनिकों की जान को भयानक खतरा पैदा हो गया। इस विषम स्थिति से निपटने के लिए लेफ्टिनेंट कर्नल गौर हथगोला लिए रेंगते हुए आगे बढ़े और यूनिवर्सल मशीन गन चालकों पर उसे तत्परता से फेंका जिससे एक और आतंकवादी मारा गया और आग उगलती मशीनगन भी नष्ट हो गई।

इस जान जोखिम से भरी कार्यवाही में पराक्रम और साहस की मूर्ति लेफ्टिनेंट कर्नल गौर के सीने में अनेक गोलियां लगीं, उसी दिन वे वीरगति को प्राप्त हुए।

लेफ्टिनेंट कर्नल हर्ष उदय सिंह गौर ने नेतृत्व, निष्ठा और कर्तव्य परायणता से कहीं ऊपर उठ कर अति असाधारण शौर्य, पराक्रम एवं देशप्रेम का अनुपम परिचय दिया।

मंजीर नाथ, संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

NOTIFICATION

New Delhi, the 25th January, 1995

No. 80-Pres/95.—The President is pleased to approve the award of Ashoka Chakra for most conspicuous bravery to :—

1. JC-216611 NAIB SUBEDAR SUJJAN SINGH, 13 KUMAON (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 26 September, 1994)

On the 26th September 1994, Naib Subedar Sujjan Singh was the search party commander during cordon and search operations to flush out terrorists from the jungles near village Zalurah, of District Kupwara in Jammu and Kashmir. After identifying two hideouts of terrorists, he alongwith his party moved forward. When they were 15 metres from the hideout the terrorists brought down intense and accurate fire on them. When it became impossible for the search party to move forward, one of the officers alongwith some men moved towards the terrorist to divert their attention. On a quick assessment of the situation, Naib Subedar Sujjan Singh feared that the lives of the advancing officer and his party were in danger. In order to protect them, Naib Subedar Sujjan Singh alongwith another Sepoy frontally charged at the terrorists through the hail of bullets. Although he received a burst of fire in his stomach, yet, unmindful of his personal safety, he continued to charge forward firing from his rifle, till a volley of bullets pierced his helmet and his head killing him instantaneously.

The daring act of supreme self sacrifice of Naib Subedar Sujjan Singh not only resulted in the death of four terrorists and their so called battalion commander, recovery of four weapons and large quantity of ammunition but also saved the lives of his officer and fellow jawans.

2. LIEUTENANT COLONEL HARSH UDAY SINGH GAUR (IC-36177) 10 BIHAR (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 29 November, 1994)

On the 29 November 1994, at 7.00 AM Lieutenant Colonel Harsh Uday Singh Gaur alongwith his quick reaction team launched an operation to flush out foreign mercenaries from village Bazipura of District Baramullah in Jammu and Kashmir. Soon Lieutenant Colonel Gaur and his team came under a heavy volume of AK rifle and Universal Machine Gun fire of the terrorists. Quickly assessing the situation, Lieutenant Colonel Gaur deployed two of his companies to block escape routes of these criminals while he himself got down to neutralising their fire.

In this exchange of fire, the 41 year old, brave Lieutenant Colonel Gaur using ground cover and utilising his tactical sense moved forward to the flank of the terrorists. This sudden and bold action took the terrorists by complete surprise. Lieutenant Colonel Gaur promptly opened fire and killed three of them

At the same time, from behind the rocks from a nearby hillock, other foreign terrorists brought heavy fire from a Universal Machine Gun on Lieutenant Colonel Gaur putting his life and that of his fellow soldiers in grave danger. With a view to deal with this adverse situation, Lieutenant Colonel Gaur crawled forward with a grenade in his hand and lobbed it at the Universal Machine Gun position killing yet another foreign terrorist and destroying the menacing gun.

In this extremely dangerous action, Lieutenant Colonel Gaur, an epitome of bravery and courage received many bullets in his chest and he succumbed to his injuries later in the day.

Rising far above the call of duty Lieutenant Colonel Harsh Uday Singh Gaur set a shining example of extraordinary courage, devotion to duty and patriotism.

SUDHIR NATH, Jt. Secy.

Printed by the Manager, Govt. of India Press, Ring Road, Maya Puri, New Delhi-110064
and Published by the Controller of Publications, Delhi-110054, 1995